पूॼें कोहु पथर, तूं चरिया चेतन खे छॾे,
जंहीं साधन सिधि कया, तंहिंजी करि नजर
साखी ॿोले सभ में, थो व्यापकु चर अचर,
सामी अजर अमर, छॾे पूॼि न पिंड खे.

सामी साहब मनुष्य को समझाते हुए कहते हैं, ''हे मनुष्य! तुम चेतन (परमेश्वर) को छोड़ कर पत्थर (अचेतन/जड़) को क्यों पूज रहे हो? अरे, तुम उस (परमेश्वर) पर दृष्टि डालो, जिसने संसार के सभी साधन सिद्ध किये हैं। (यह सारी सृष्टि रची है।) वह चेतन, परमेश्वर ही सभी चल-अचल अर्थात् जीवों और जड़ पदार्थों में साक्षी बन कर बोल रहा है। हे मनुष्य! परमेश्वर अजर-अमर है, उसको छोड़ कर तुम नाशवान पिंड (देह, शरीर) की पूजा मत करो।''

परब्रह्म के अनेक नाम हैं। ब्रह्म, परमेश्वर, परमात्मा, विश्वंभर, सर्वेश्वर, भगवान, सर्वज्ञ, साक्षीरूप, आत्माराम, सच्चिदानंद, राम, आत्मचैतन्य, आत्म-स्वरूप, ॐकार, प्रणव आदि एक परब्रह्म के ही नाम हैं। परब्रह्म ने ही यह सारा ब्रह्मांड, विश्व रचा है। परब्रह्म विश्व के कण-कण में व्याप्त है। वह अनंत है, अनंत, निर्गुण-निराकार है। वह चर्म-चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता। शाश्वत ब्रह्म को देखने के लिए सतगुरु की शरण में जाना चाहिए। सतगुरु ही मनुष्य के अज्ञान/अविद्या का आवरण हटा कर अंतर्ज्ञान प्रदान करते हैं। अंतर्ज्ञान द्वारा मनुष्य को परब्रह्म/परमेश्वर की अनुभूति हो सकती है।

सामी साहब उस चेतन परमेश्वर की पूजा करने की सलाह देते हैं। उनके विचारानुसार मनुष्य को पत्थर जैसी अचेतन, निर्जीव वस्तु की अपेक्षा चेतन परमेश्वर की भक्ति करनी चाहिए। वही एक साक्षीरूप में इस चराचर, चेतन और जड़ जगत में निवास करता है। वह अविनाशी एवं अमर है। उसी की भक्ति करने से जीवन सार्थक बन सकता है। वह परमेश्वर तुम्हारे हृदय में ही बसा हुआ है। उसको पहचानो और उसी से मिल कर एकरूप हो जाओ। बाहर वाले जड़ पत्थर पूजने से कोई लाभ होने वाला नहीं है।

पाहन पूजैं हरि मिलैं, तो मैं पूजूं पहाड़।
तांते ये तों चाकी भली, जो पीस खाय संसार॥
पत्थर केरा पूतला, करि पूजै करतार।
इसी भरोसे जे रहे, ते बूड़े मंझधार॥
(कबीर)

■